जिस आदमी ने खुद के लिए खाना पकाया

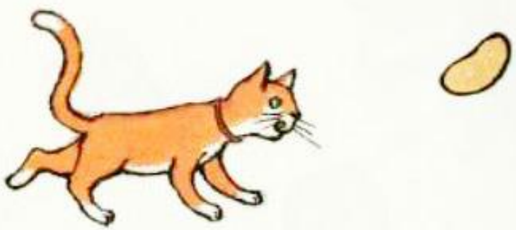
फिलिस क्रासिलोव्स्की

चित्र: मोमरू फनाई





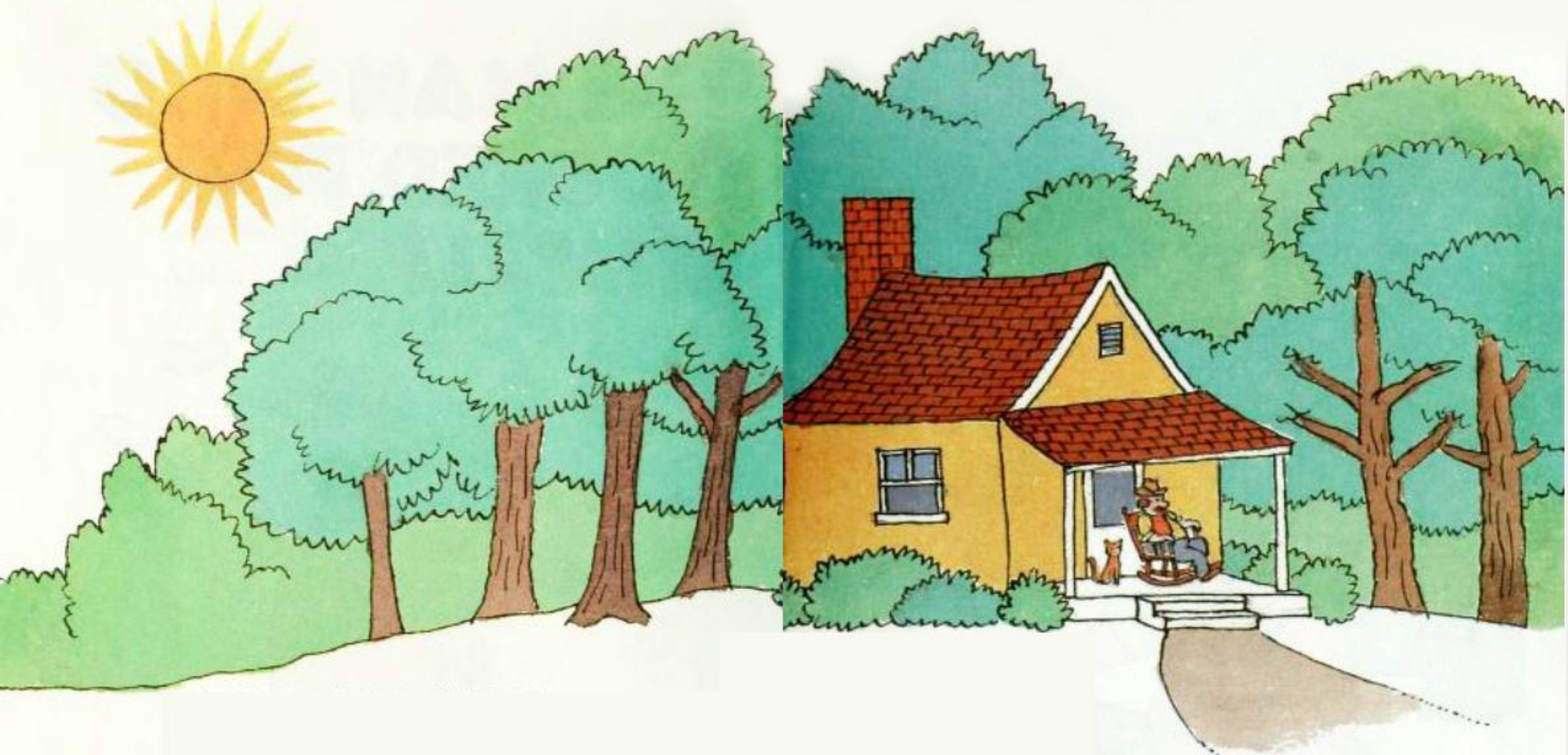
जिस आदमी ने खुद के लिए खाना पकाया





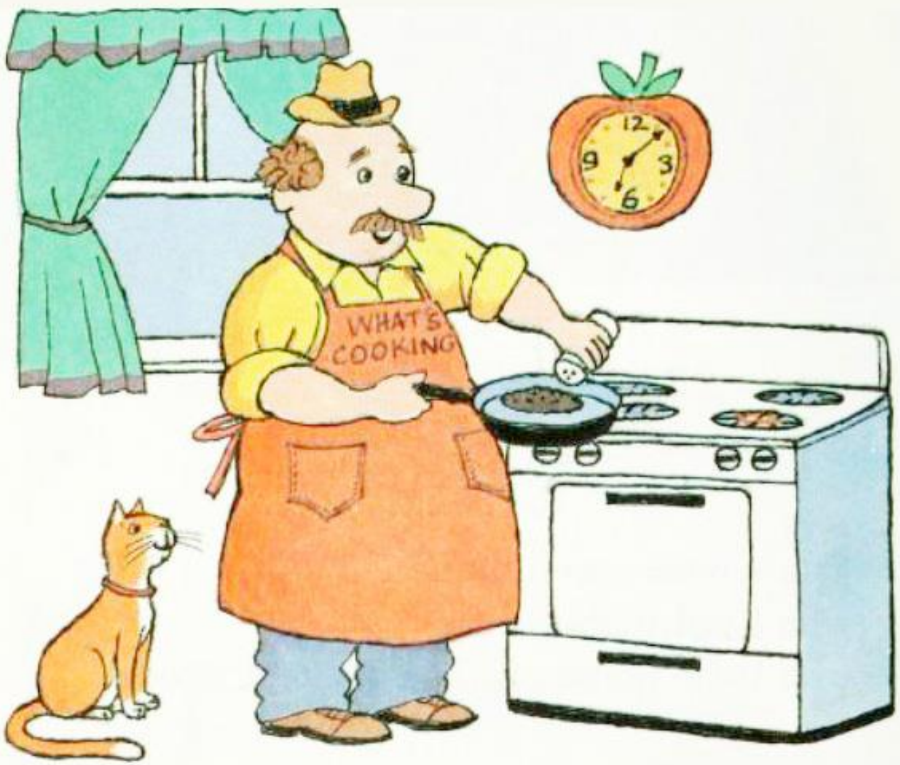
फिलिस क्रासिलोव्स्की

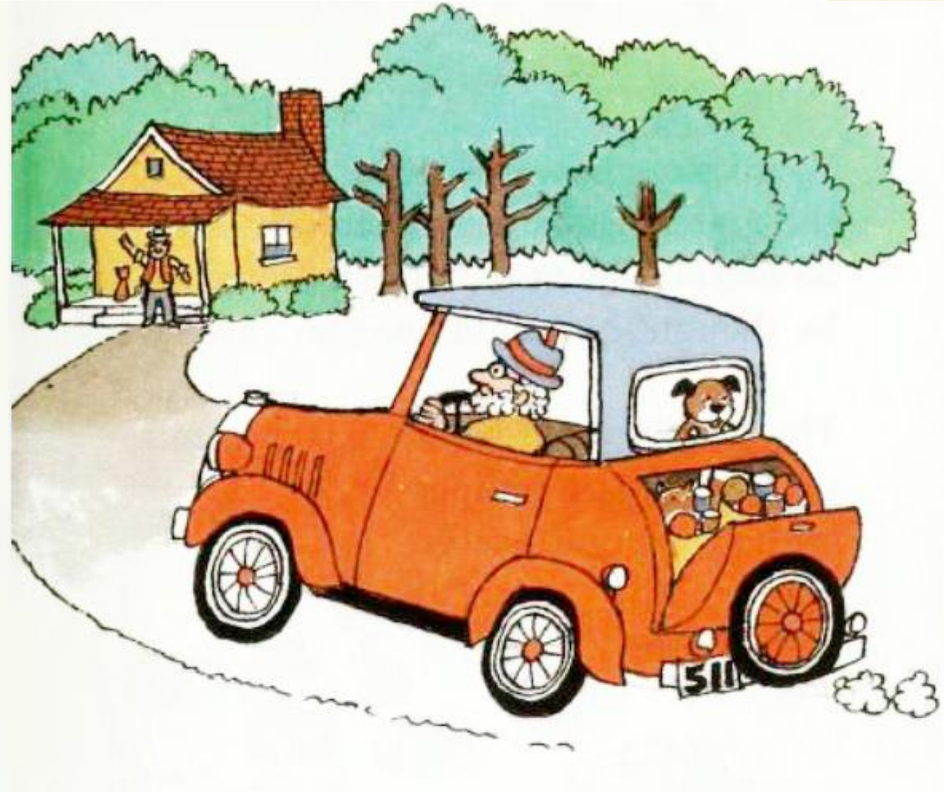
चित्र: मोमरू फनाई



एक आदमी एक जंगल के किनारे अपनी
बिल्ली के साथ एक छोटे से घर में रहता था.

उस आदमी के पत्नी या बच्चे नहीं थे, इसलिए वो हमेशा अपना रात का खाना खुद ही बनाता था, घर की खुद सफाई करता था, और अपना बिस्तर भी खुद ही बनाता था.





उस आदमी के पास कार या टेलीफोन भी नहीं था.

लेकिन उसका एक अज़ीज़ दोस्त था जो हर कुछ दिनों में उससे मिलने आता था और अपने साथ उसकी सभी ज़रूरत की चीज़ें लाता था.

जब गर्मियां आईं, तो उस आदमी के दोस्त ने सैर-सपाटे पर जाने का फैसला किया.

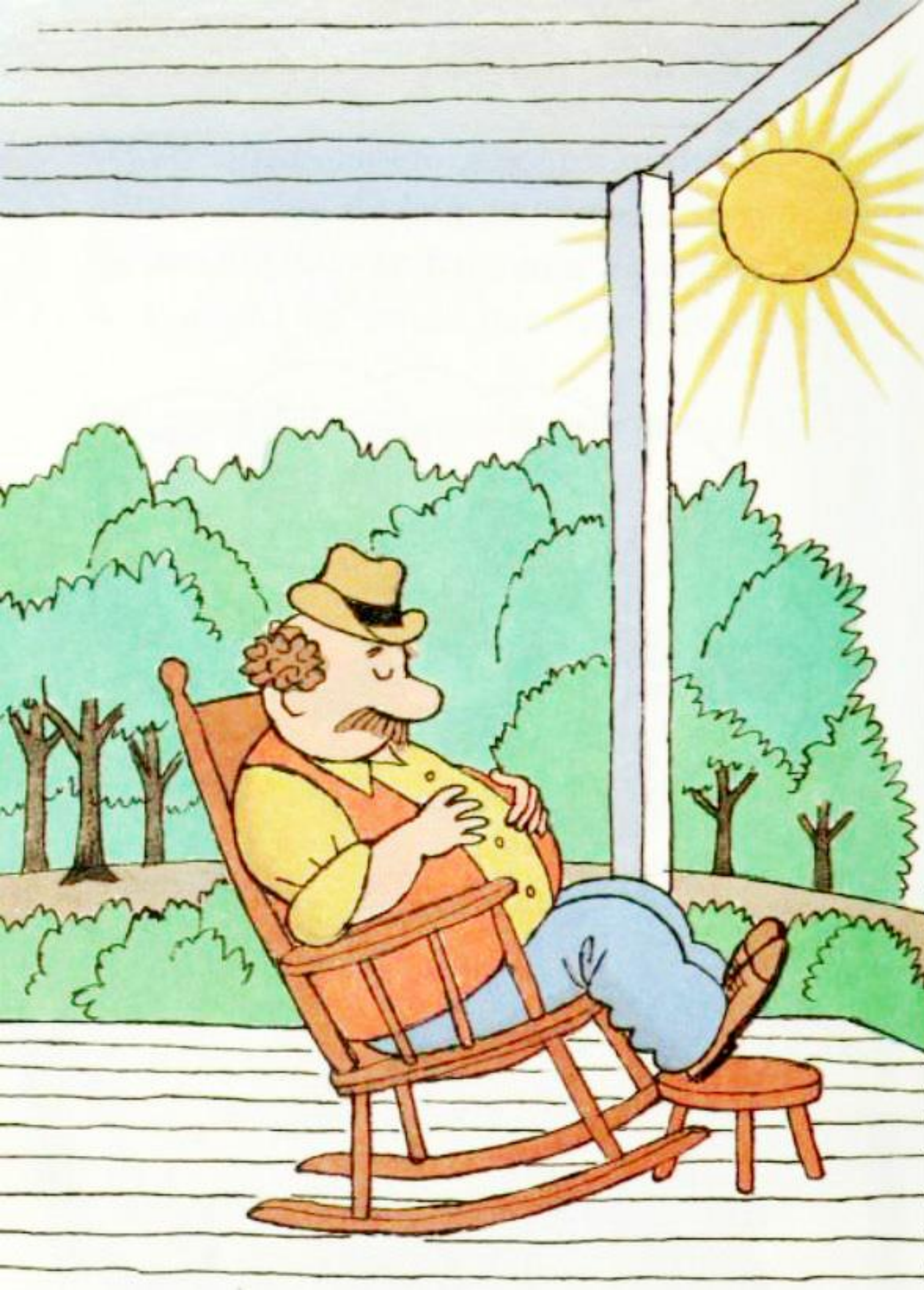
इसलिए दोस्त ने उस आदमी से तीन सप्ताह के लिए अपनी ज़रुरत का सब सामान मंगा लेने को कहा.

आदमी ने मांस, अंडे, बिस्कुट, किशमिश, सेब, लॉलीपॉप, कुरकुरे, मूंगफली का मक्खन, केचप, गाजर, प्याज, मिर्च, नाशपाती, केले, अचार



- और अपनी बिल्ली के लिए दूध और मछलियां भी मंगाईं.



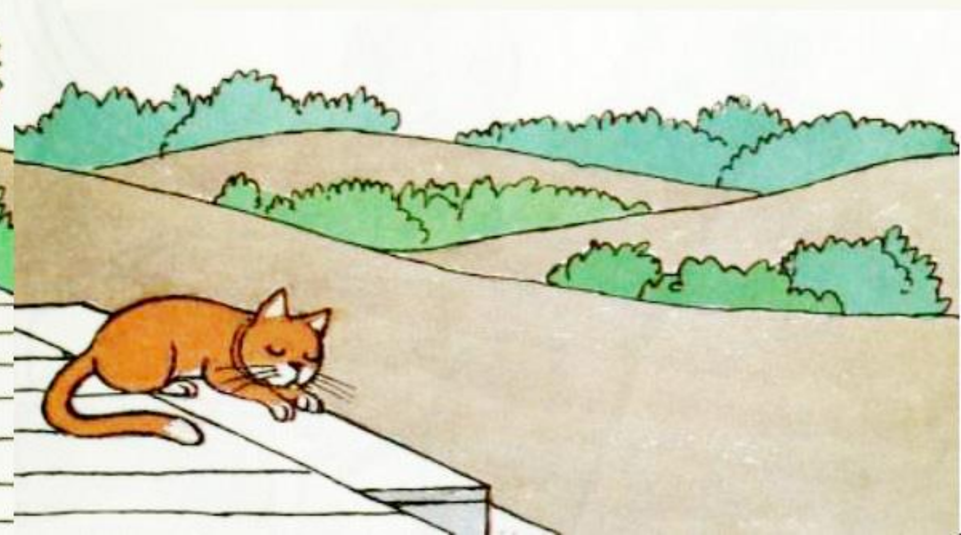


अगले दिन उसने सब सामान संभालकर रख दिया. फिर उस आदमी ने फैसला किया कि वो बिना कुछ काम किए गर्मियों का आनंद ले लेगा.

फिर वो अपनी रॉकिंग कुर्सी पर धूप में बैठ गया.

उसके बाद से वो प्रतिदिन आलसी होता गया.

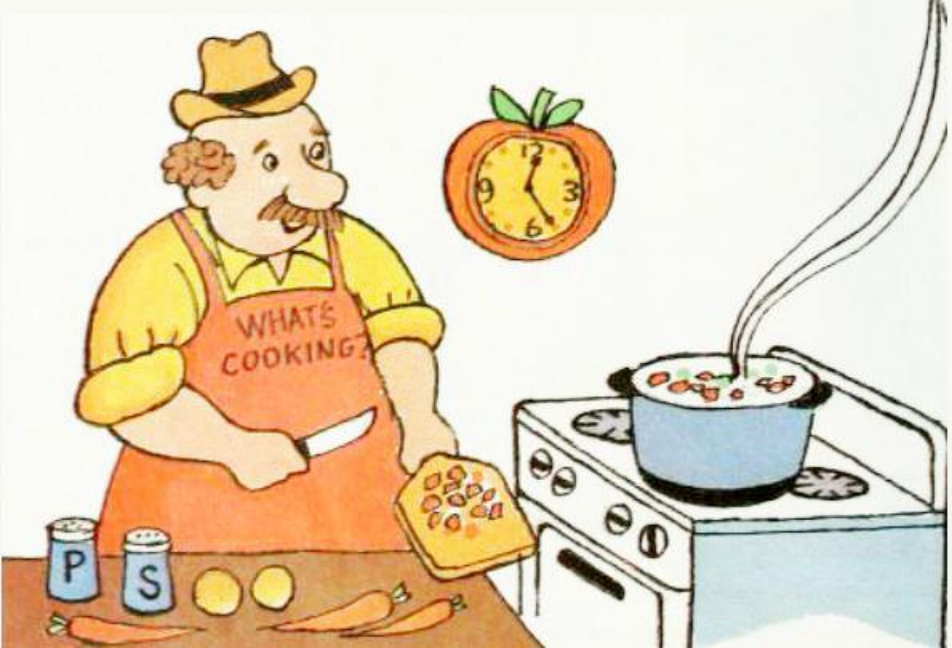
फिर वो इतना आलसी हो गया; कि वो अपने लिए खाना भी बनाना नहीं चाहता था.



इसलिए एक दिन उसने एक बहुत मात्रा में शोरबा बनाया जिससे उसका खाना लंबे समय तक चले.

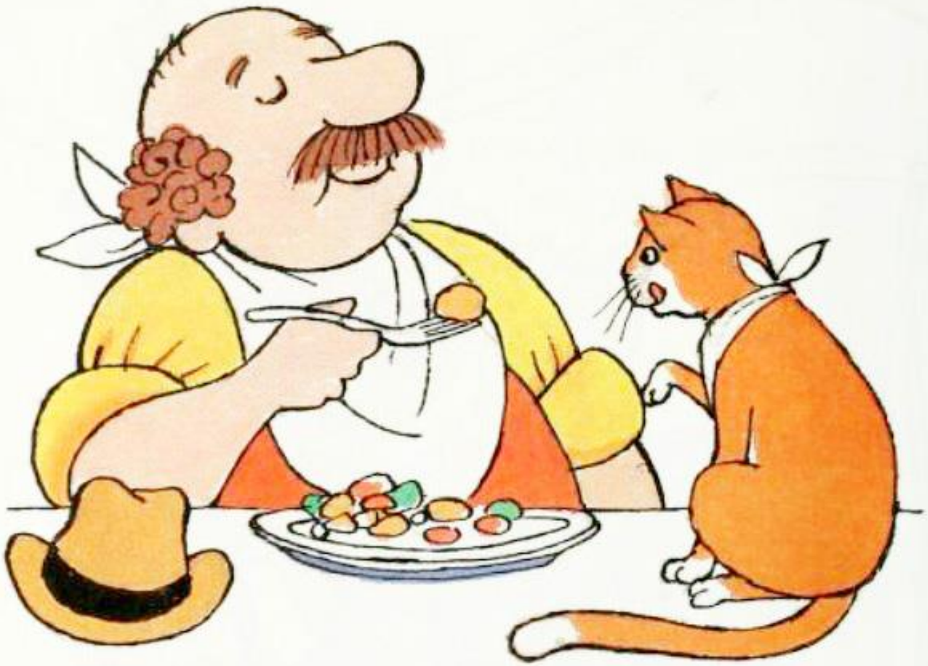
उसने गाजर और प्याज, मिर्च और मांस को काटा और उसमें नमक और काली मिर्च मिलाई.

उसने सब कुछ एक बड़े बर्तन में डाल दिया और उसे पकने दिया.





फिर वो बाहर बैठ गया और उसने अपने शोरबे के पकने की महक का आनंद लिया.



रात में वो अंदर गया और उसने उसमें से कुछ शोरबा खाया.

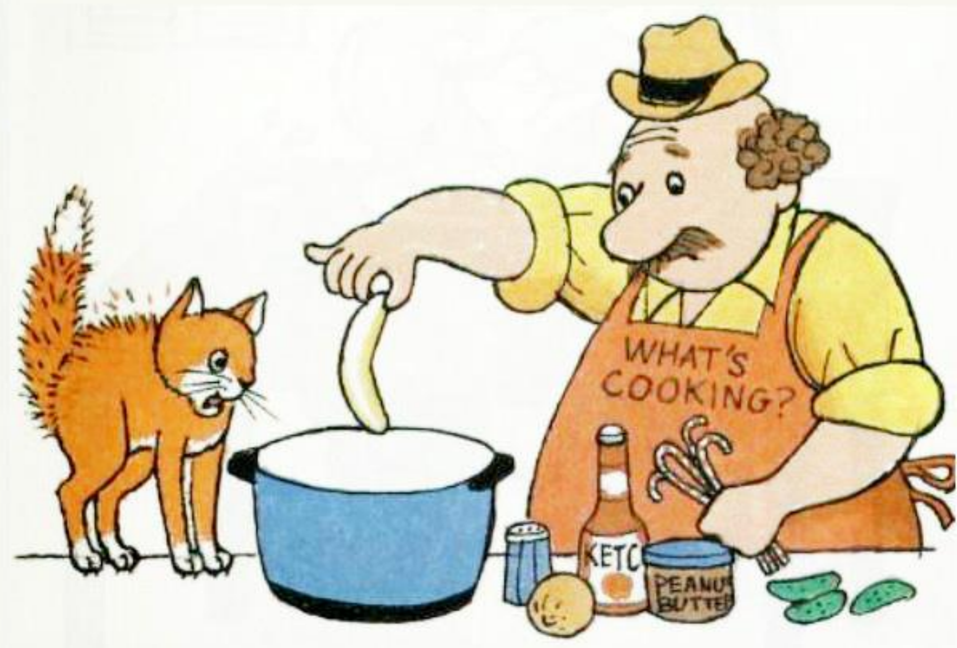
शोरबा बहुत ही स्वादिष्ट था.

वो शोरबा पूरे एक हफ्ते तक चला!

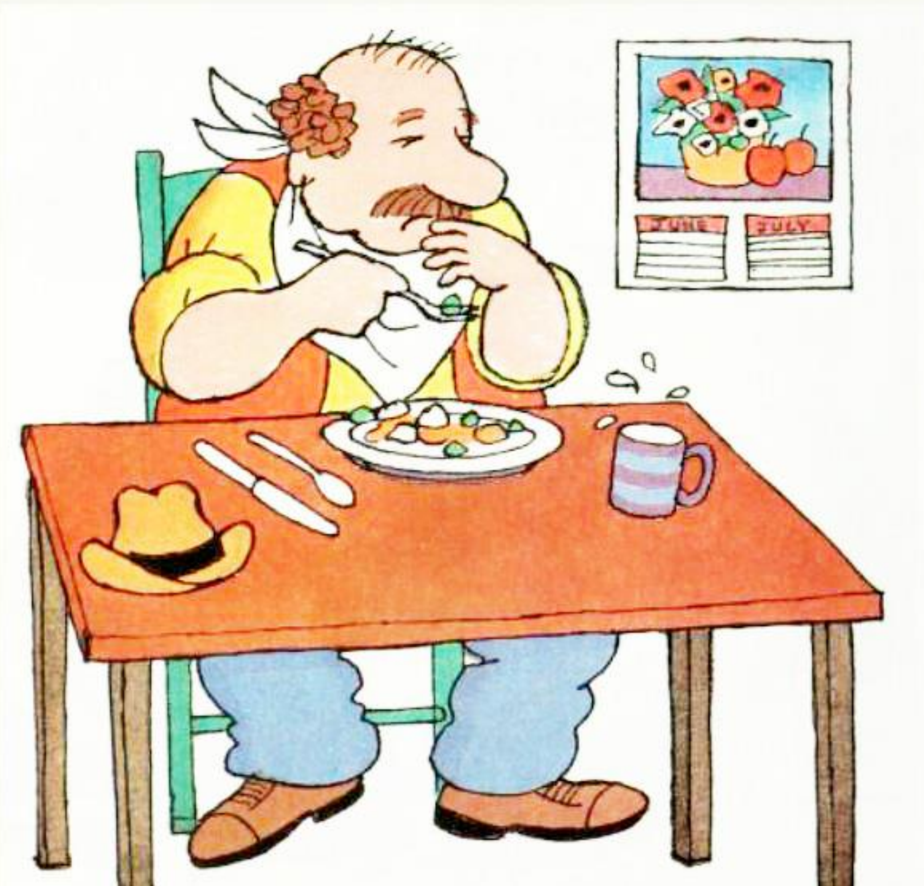
लेकिन कुछ दिनों बाद उसके पास ज्यादा खाना नहीं बचा.

उसे केवल नमक, केचप, क्रिसमस से बची चार मीठी छड़ें, कुरकुरे, पीनट बटर, एक पका हुआ केला, तीन पिकिल और एक प्याज ही मिला.

उसने उन चीजों को बर्तन में मिलाया और वो बाहर चला गया.



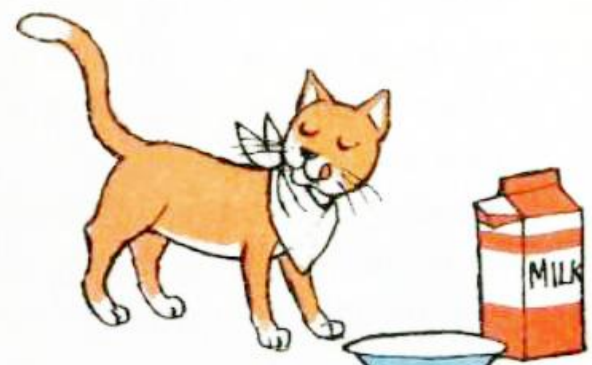
जब उस आदमी ने उस रात को शोरबा चखा, तो उसे वो बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा. सच में, उसका स्वाद एकदम भयानक था.



"बाप रे," उसने कहा.

"लगता है मुझे रात को भूखे ही सोना पड़ेगा."

सौभाग्य से, बिल्ली के लिए थोड़ा सा दूध बचा था.





फिर वो आदमी अपनी रॉकिंग चेयर पर बैठने और धूप का आनंद लेने के लिए बाहर बैठ गया.

लेकिन अब उसके दिमाग में वो केवल भोजन के बारे में ही विचार आ रहे थे.

अगले दिन उस आदमी ने घर के चारों ओर देखा और खाने के लिए चीज़ें खोजीं.

अखबार? नहीं, कागज़ खाकर उसके पेट में दर्द होगा.

पुराना कपड़? उसे वो एक भयानक विचार लगा!

तभी उसे एक उड़ती हुई मक्खी दिखाई दी.

नहीं, नहीं! वो मक्खी को बिल्कुल नहीं खा सकता था!



इसलिए, उसने टहलने जाने का फैसला किया.

जब वो एक बहते नाले के पास पहुंचा तो वो वहां कुछ देर विश्राम करने के लिए रुका.

अचानक उसके ऊपर कुछ पानी के छींटे पड़े.



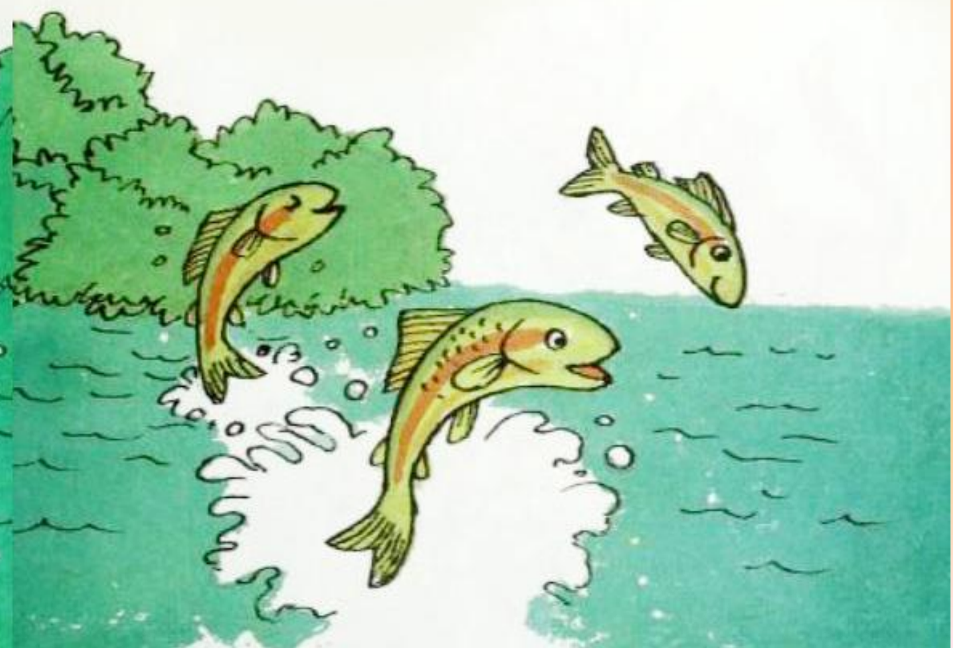
पहले तो उसे लगा कि बारिश शुरू हो गई थी.

लेकिन तभी उसने देखा कि मछलियाँ नदी में कूद रही थीं.

मछलियों के कूदने से ही उस पर पानी के छींटे पड़े थे!

"देखो," उस आदमी ने कहा.

"मछलियां, मेरे लिए और मेरी बिल्ली के लिए अच्छा रात का खाना होंगी."

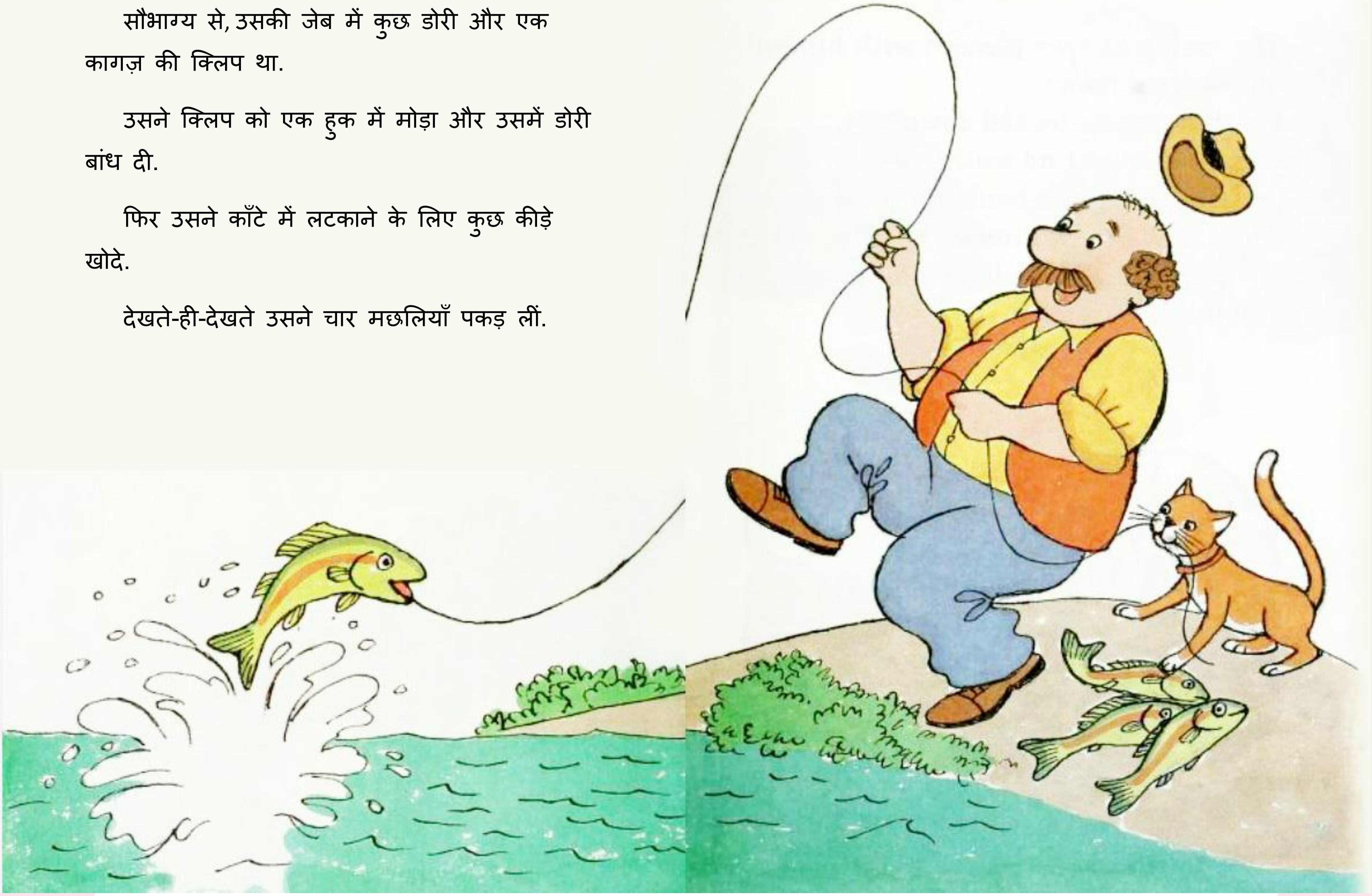


सौभाग्य से, उसकी जेब में कुछ डोरी और एक कागज़ की क्लिप था.

उसने क्लिप को एक हुक में मोड़ा और उसमें डोरी बांध दी.

फिर उसने काँटे में लटकाने के लिए कुछ कीड़े खोदे.

देखते-ही-देखते उसने चार मछलियाँ पकड़ लीं.

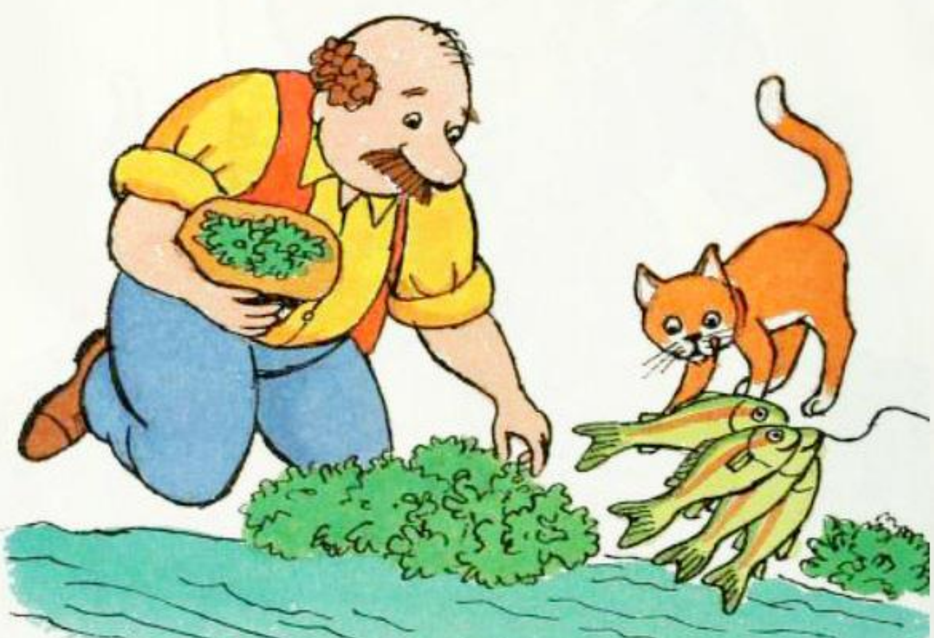


वो आदमी अपने आप से बहुत खुश हुआ और फिर घर जाने के लिए रवाना हुआ.

रास्ते में, उसने नीचे देखा और वो पानी के किनारे उगी जलकुंभी (सलाद) को देखकर चकित रह गया.

"अच्छा तो, जलकुंभी इस तरह उगती है!" उसने कहा.

उसने अपने सलाद के लिए जलकुंभी का एक बड़ा गुच्छा तोड़ा और उसे अपनी टोपी में रख लिया.





जब वो अपनी मछलियां उठाने के लिए नीचे झुका तो उसे अपनी पैंट पर नीले धब्बे दिखाई दिए.

"यह तो बड़ी मज़ेदार बात है," उसने कहा.

उसने चारों ओर देखा कि वे धब्बे कहाँ से आए थे.



उसके ठीक बगल में काले जामुन की एक झाड़ी थी.

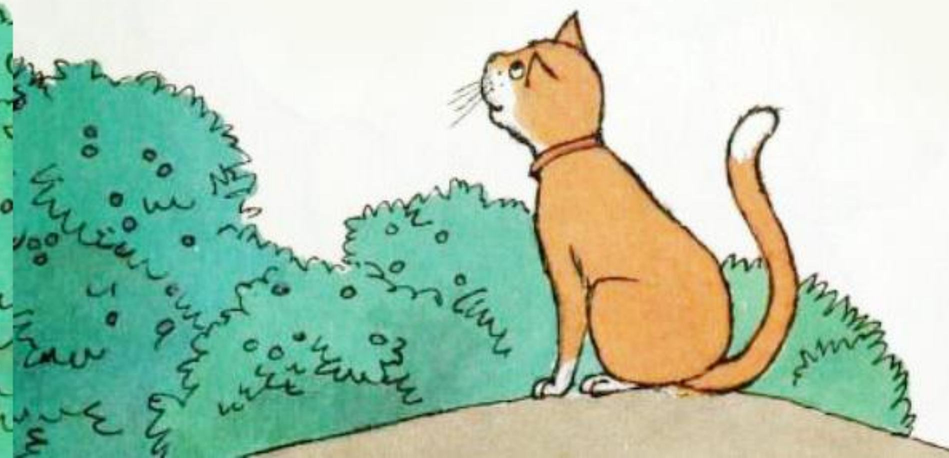
जामुन के रगड़ने से ही उसकी उसकी पैंट पर धब्बे पड़े थे!

जब उस आदमी ने पक्षियों को जामुन खाते हुए देखा तो उसे लगा कि वे जरूर अच्छे होंगे, फिर उसने भी एक जामुन चखा.

"वे काफी स्वादिष्ट हैं!" उसने कहा.

"ये जामुन दुकान में खरीदे गए जामुनों से बेहतर हैं!"

फिर उसने कुछ जामुन तोड़कर अपनी टोपी में डाल लिए.

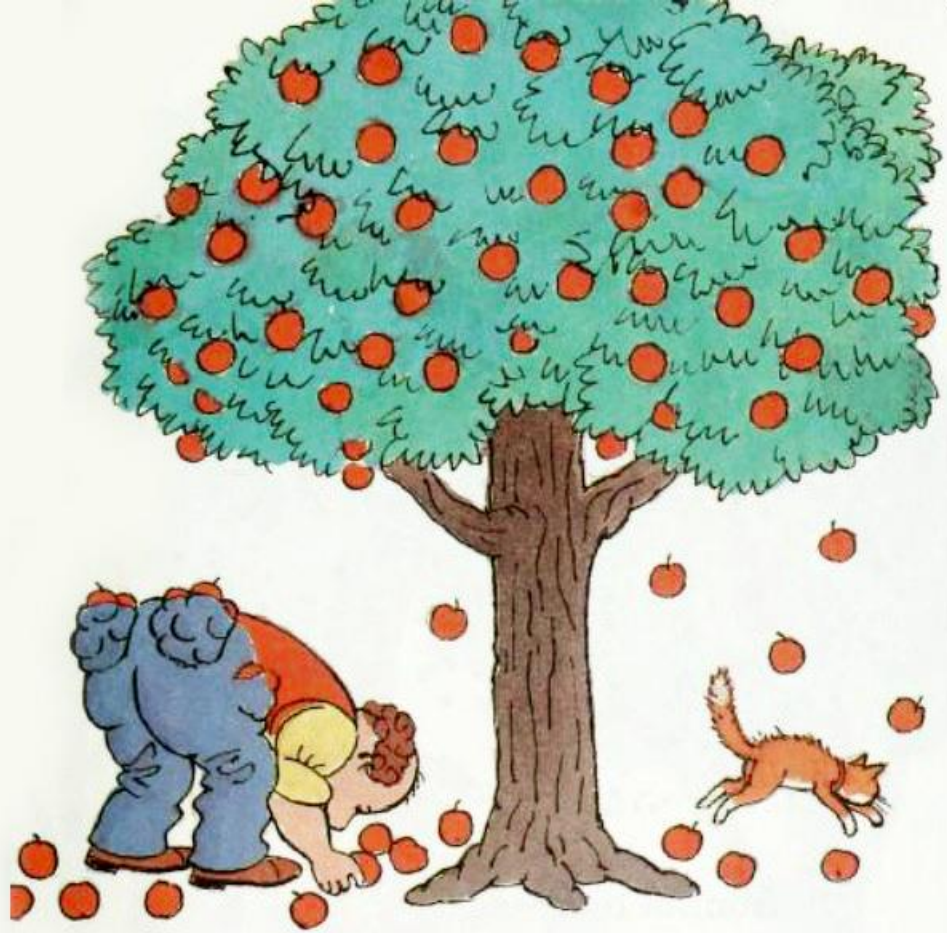


तभी उसके नंगे सिर पर कुछ जोर से गिरा.

"वो क्या था?" उसने पूछा.

जब उसने ऊपर देखा तो एक पेड़ पर कुछ सेब लटके हुए थे.

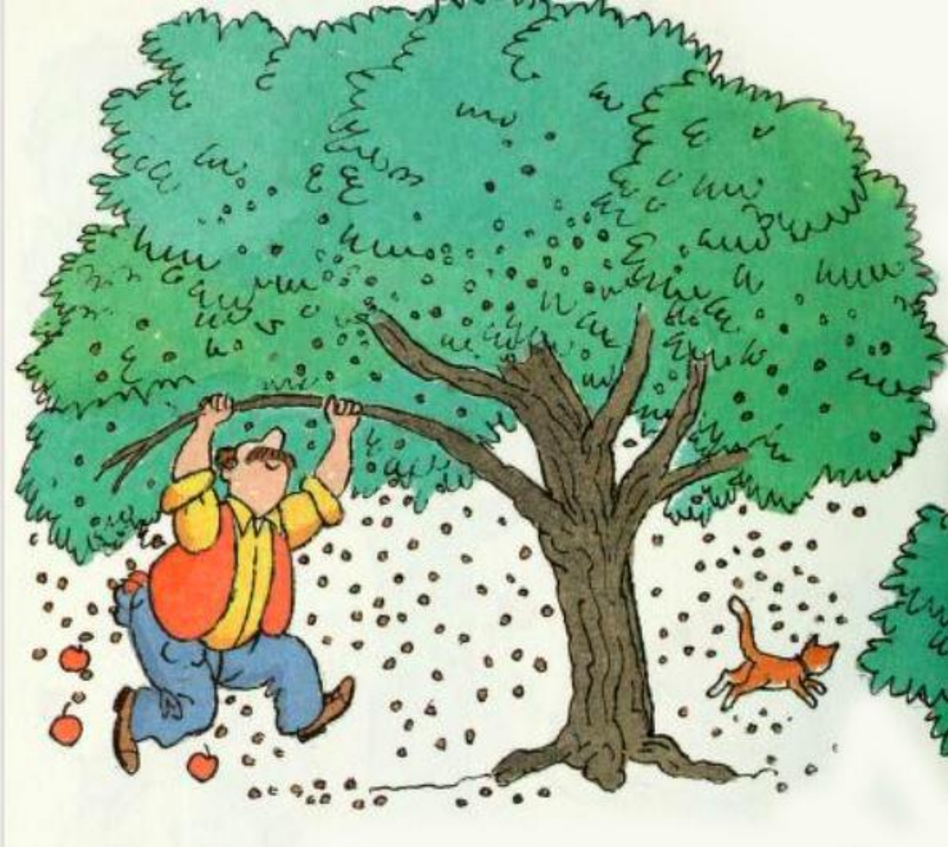




"सेब! मुझे तो सेब बेहद पसंद है!" उसने कहा.

जल्द ही उसकी जेबें इतनी भर गईं कि वे फटने लगीं.

अब वो आदमी अपने आसपास की चीजों को पहले से कहीं ज्यादा बारीकी से देखने लगा था.



उसके सामने एकोर्न से भरा एक विशाल बलूत (ओक) का पेड़ था.

"अरे मैं उनके फलों से चीले (पैनकेक्स) बना सकता हूँ!" उस आदमी ने कहा.

उसने शाखाओं को हिलाया जिससे बलूत के ढेर सारे फल नीचे गिर गए.

फिर, चूँकि उसके पास कुछ और कुछ काम नहीं था, इसलिए वो अपने घर चला गया.



वह फौरन अपने किचन में काम करने चला गया.





रात के खाने के लिए, उसने अपनी बिल्ली को एक मछली दी.

बिल्ली ने मछली का एक-एक टुकड़ा खाया, फिर उसने अपने पंजों को चाटा और म्याऊँ करने लगी.

आदमी ने तली हुई मछली, सलाद और जामुन खाए.

उसे खाना इतना अच्छा लगा कि वो अपनी बिल्ली की तरह ही गुनगुनाने लगा.

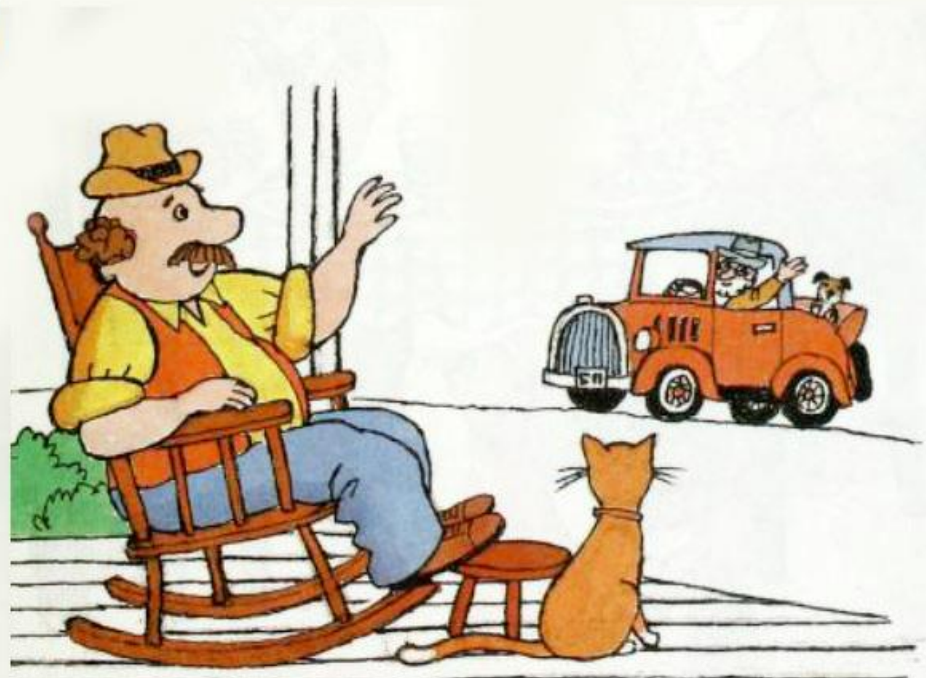


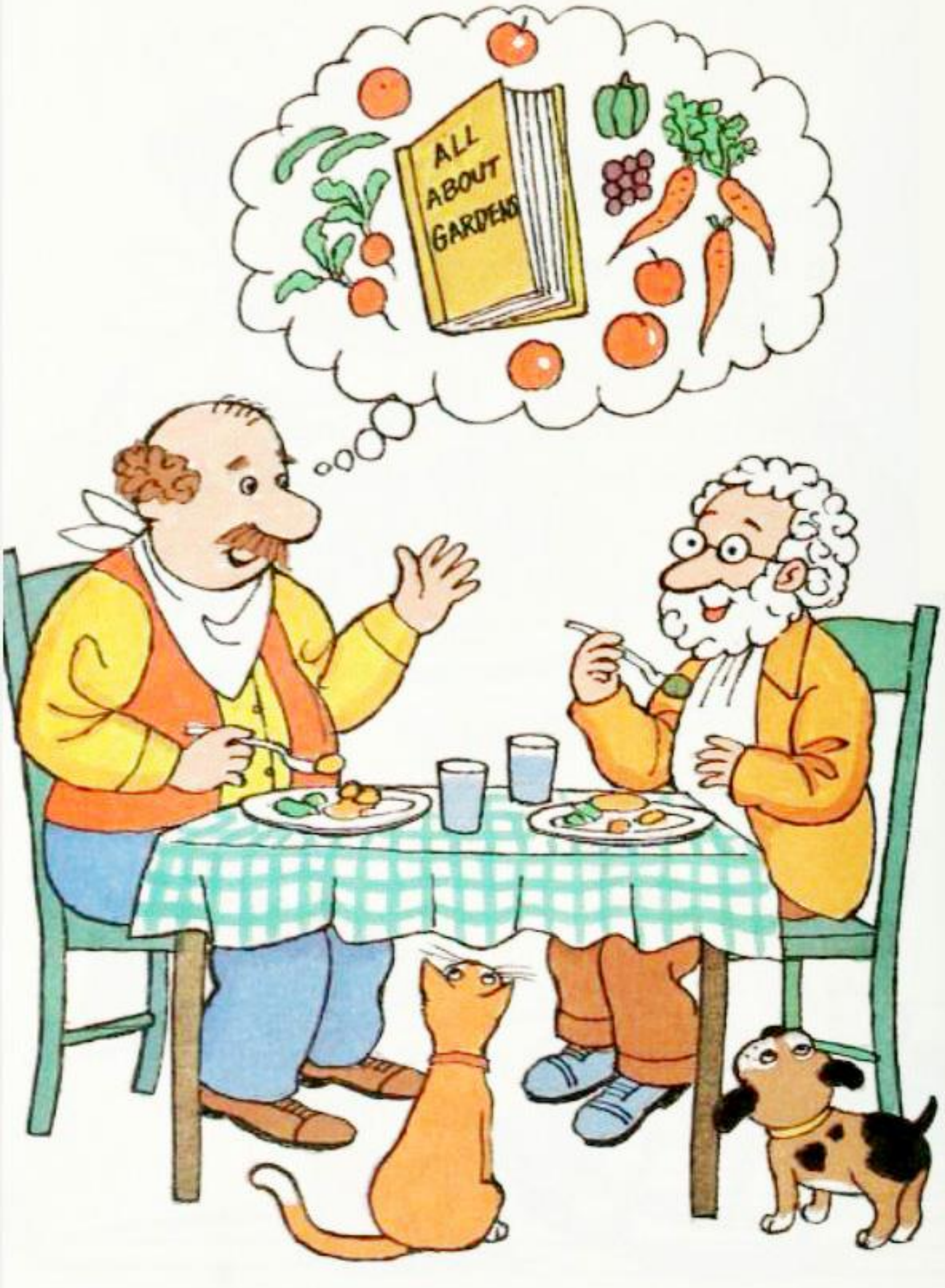
फिर वो बाहर अपनी रॉकिंग चेयर पर बैठ गया. उसका पेट भरा था और वो काफी खुश था.

दोपहर में उस आदमी को एक कार के हॉर्न की आवाज सुनी.

उसका दोस्त यात्रा से लौट आया था.

सुबह उन्होंने बलूत के चीले (पैनकेक्स) और सेब की चटनी का स्वादिष्ट नाश्ता खाया.





उस आदमी ने खाने की जो स्वादिष्ट चीज़ें इकट्ठी की थीं उसे उन पर गर्व था इसलिए उसने अपने मित्र को खाने पर आमंत्रित किया.

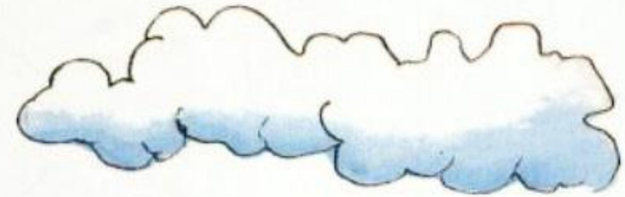
अब जब उसके मित्र ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए, तो उस आदमी ने अपने दोस्त से बागवानी के बारे में एक पुस्तक माँगी.

"अगले वसंत, मैं सब्जियों का एक बगीचा लगाऊंगा," उस आदमी ने कहा.





उस पूरी सर्दी में उस आदमी ने अपने बगीचे की योजना बनाई.

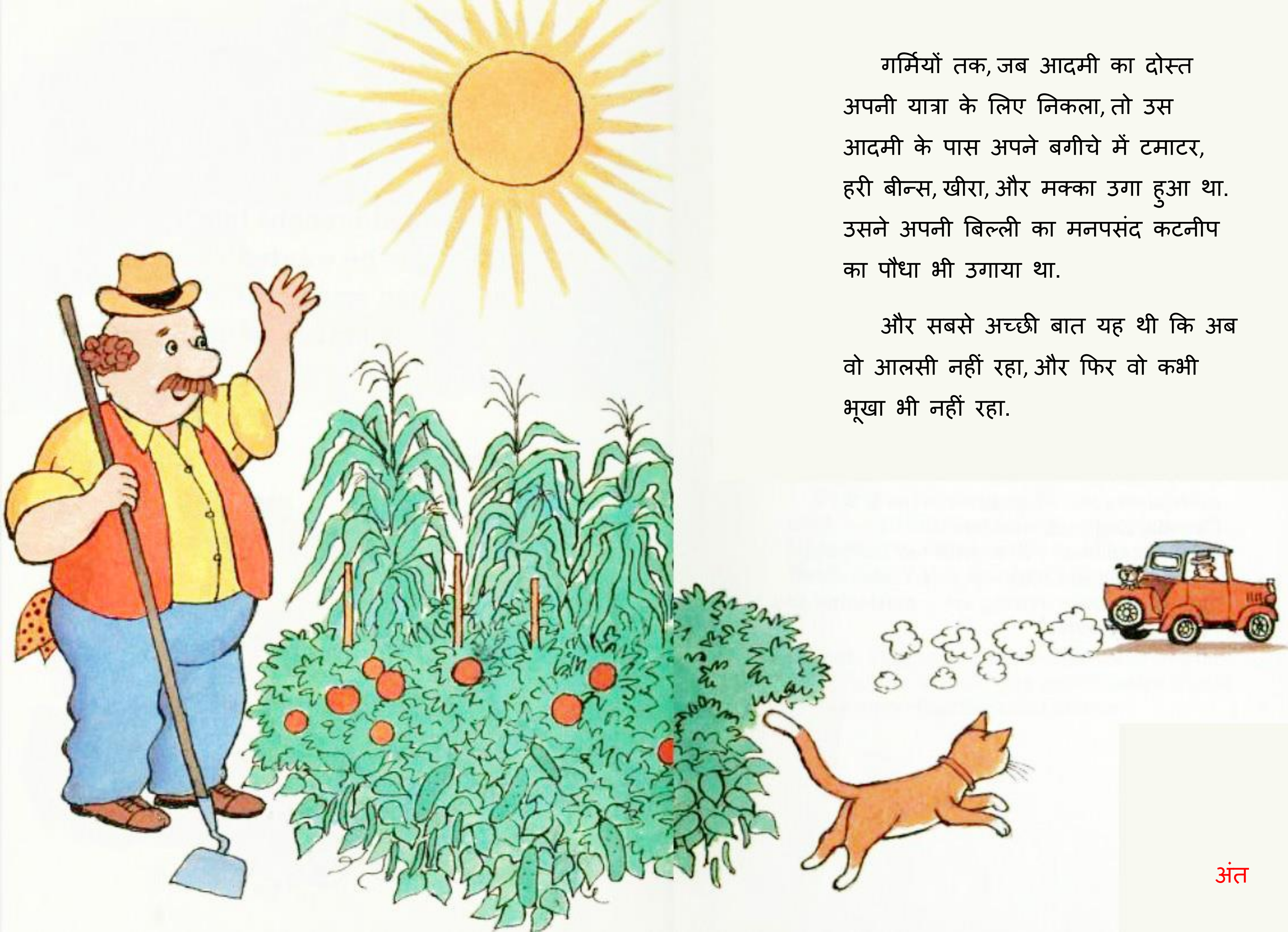


उसका मित्र उसके लिए वो सभी बीज लाया जो उसने मांगे थे. वसंत आने पर उस आदमी ने उन्हें बोया.



गर्मियों तक, जब आदमी का दोस्त अपनी यात्रा के लिए निकला, तो उस आदमी के पास अपने बगीचे में टमाटर, हरी बीन्स, खीरा, और मक्का उगा हुआ था. उसने अपनी बिल्ली का मनपसंद कटनीप का पौधा भी उगाया था.

और सबसे अच्छी बात यह थी कि अब वो आलसी नहीं रहा, और फिर वो कभी भूखा भी नहीं रहा.



अंत